अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया

Development Of Learner And Teaching Learning Process

डॉ० गया सिंह

अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया

विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० एड०, एम०एड०, बी०ए० (शिक्षाशास्त्र), एम०ए० (शिक्षाशास्त्र) एवं एम० फिल कक्षाओं हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) के नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

लेखक

डॉ० गया सिंह

एम० एस० सी० (गणित), एम० ए० (अर्थशास्त्र), एम० एड०,
एम० बी० ए०, पी०एच० डी०
अध्यक्ष : अध्यापक शिक्षा विभाग
केवलानन्द बी० एड० कॉलेज
दारानगर, गंज, बिजनौर (ऊ० प्र०)

Specimen Copy

एकमात्र वितरक

आर. लाल बुक डिपो

(AN ISO 9001-2008 Certified Company)

निकट राजकीय इण्टर कॉलेज, बेगम ब्रिज रोड, मेरठ-250001

5. यह सिद्धांत आदत निर्माण मे सहायक सिद्ध होती है।
6. इस सिद्धांत ने प्रयुक्त शिक्षण विधियों पर भी अपना अनुकूल प्रभाव दर्शाया जिससे रोचक शिक्षा का प्रचलन प्रारम्भ हुआ।
7. यह सिद्धांत बालको को आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल देता है जो बालको को अध्ययन हेतु प्रेरित करती है।

हल के सबलीकरण सिद्धांत की सीमायें
(Limitations of Hull's Reinforcement theory)

बल के सबलीकरण सिद्धांत में अनेक गुण विद्यमान होने के साथ ही कुछ सीमायें भी है—

1. यह सिद्धांत सीखने में सकारात्मक प्रेरणा के साथ-साथ नकारात्मक प्रेरणा पर भी बल देता है जो कि शैक्षिक वातावरण के लिए उपयुक्त नहीं है।
2. इस सिद्धांत में पुनर्बलन के अलावा कोई अन्य नया प्रत्यय नहीं है तथा अपने सिद्धांतों को प्रयोगों द्वारा सिद्ध नहीं कर सका है।
3. यह सिद्धांत सीखने को प्रयास एवं त्रुटि (Trail and Error) द्वारा सीखने की विधियों तक ही सीमित है।
4. इस सिद्धांत में स्वयं सिद्धियों को व्याख्या अनावश्यक रूप से अंकों में की गई है।
5. यह सिद्धांत चूहों के सीखने में चाहे कितना ही सही क्यों न हो किन्तु उसको मानव के सीखने में सही नहीं माना जा सकता है।
6. यह सिद्धांत प्राणी की सीखने की अनुक्रिया पुनर्बलन से ही दृढ़ होना मानते है तो कष्ट की परिस्थिति में प्राणी कैसे सीखता है?

6. कुर्ट लेविन का संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत
(Kurt Lewin's cognative Field Theory)

साहचर्य सिद्धांतों की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप कुर्टलेविन ने संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। कुर्ट लेविन (1890-1947) एक जर्मन मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने कोफ्का तथा कोहलर के साथ कार्य किया था और बाद में अमेरिका आकर कई विश्वविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। कुर्ट लेविन महोदय ने अधिगम के संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1917 में किया था। इस सिद्धांत को मनोविज्ञान के क्षेत्र में तलरूप सिद्धांत (Topological Theory), सदिश मनोविज्ञान सिद्धांत (Vector Psychology Theory) भी कहकर सम्बोधित किया जाता है। कुर्ट लेविन ने क्षेत्र सिद्धांत के अन्तर्गत, व्यक्ति क्षेत्र, जीवन विस्तार, रूप, सदिश, विभिन्न अवरोध तथा कर्षण शक्तियों आदि के आधार पर अधिगम के सिद्धांत को स्पष्ट किया है।

कुर्ट लेविन का संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत गेस्टाल्ट सिद्धांत (Gestalt Theory) के ही समान है किन्तु यह थोड़ा सा भिन्न हैं क्योंकि यह अनुभव के साथ पर व्यवहार को तथा मानवीय अभिप्रेरणा को अधिक महत्व देता है। कुर्ट लेविन ने अपने विचार के आधार पर वातावरण में व्यक्ति की स्थिति को बताते हुए कहा है कि—"व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए, व्यक्ति की स्थिति को उद्देश्यों से सम्बन्धित मानचित्र में निर्धारित करने एवं प्रयत्नों की जानकारी आवश्यक है।"

लेविन ने संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत के आधार पर अधिगम को परिभाषित करते हुए कहा है कि—"अधिगम एक सापेक्षिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से अधिगम कर्ता में नवीन अन्तर्दृष्टि का विकास होता है अथवा प्राचीन में परिवर्तन होता है।" कुर्ट लेविन के अनुसार अधिगम कोई अनोखी क्रिया नहीं है बल्कि—"अधिगम वातावरण का संगठन है।" (Learning is the organization of the environment.) लेविन का मानना है कि मानव की अन्तर्दृष्टियाँ सामूहिक रूप से मानव के जीवन विस्तार (Life space) की संज्ञानात्मक संरचना बनाती हैं। प्राणी को उसके वातावरण से अलग करके नहीं समझा जा सकता है। प्राणी और वातावरण एक दूसरे से अन्त: क्रिया करते है।

सिद्धांत की व्याख्या
(Interpitation of Theory)

लेविन के अनुसार सीखना कोई अनोखी क्रिया नहीं है। उनका मानना है कि अधिगम की क्रिया को समझने के लिए हमको केवल यह समझना होगा कि जीवन स्थल (Life space) का नवसंगठन किस प्रकार होता है तथा मनोवैज्ञानिक संसार की संरचना किस प्रकार होती है। अधिगम हमारे अनुभवों या जीवन स्थल की संरचना में परिवर्तन लाने से होता है। यह सिद्धांत मनुष्य तथा उसकी सीखने की प्रक्रिया को निरपेक्ष या यांत्रिक नहीं मानता अपितु सापेक्षिक यानी एक-दूसरे से सम्बन्धित मानता है। यह सिद्धांत अनुभव के स्थान पर व्यवहार को अधिक महत्व देता है तथा प्रेरणाओं आदि को अधिक प्रयोग में लाता है। लेविन महोदय ने अपने सिद्धांत को स्पष्ट करने हेतु गणित तथा विज्ञान सम्बन्धी प्रत्ययों जैसे—क्षेत्र बल (Field Force) तलरूप (Topology), जीवन विस्तार (Life space), सदिश (Vector), कर्षण शक्ति (Velences) आदि का प्रयोग किया जाता है। अधिगम की व्याख्या भी लेविन ने व्यक्ति, वातावरण, बाधाएँ, बाँधाओं पर विजय तथा उद्देश्य प्राप्ति की व्याख्या करके स्पष्ट किया है।

अधिगम की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से समझने के लिए यह जानना आवश्ययक होगा कि जीवन-विस्तार किस प्रकार पुन: व्यवस्थित होता है और किस प्रकार मनोवैज्ञानिक संसार की पुनर्रचना होती है? इसका स्पष्टीकरण निम्नलिखित चित्र की सहायता से किया जा सकता है।

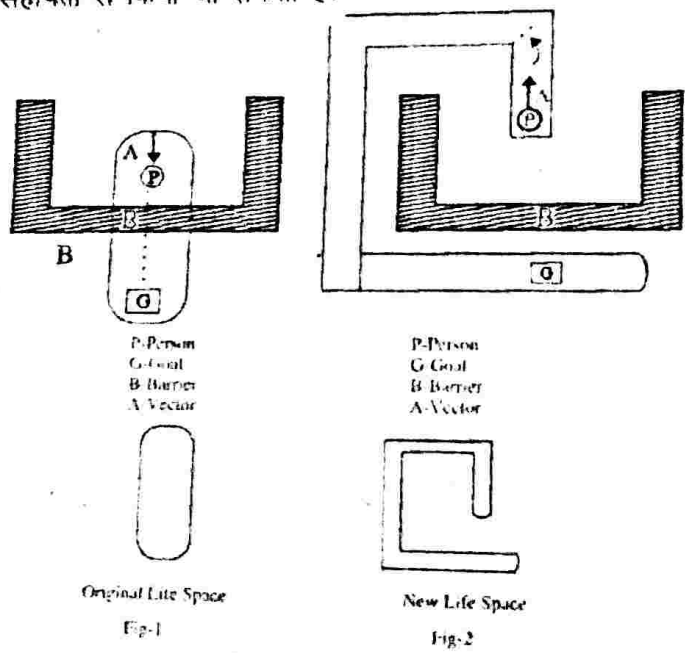

Original Life Space
Fig-1

New Life Space
Fig-2

उपर्युक्त चित्र न० 1 में व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है, परन्तु उसके मार्ग में एक यू आकार की (U-Shaped) बाधा उपस्थित होती है। वह इस बाधा के कारण अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ होता है। इसी अन्तराल में मानव की अन्तर्दृष्टि उसके जीवन-विस्तार में परिवर्तन लाती है। उसके व्यवहार में परिवर्तन करके वातावरण में एक संगठन उत्पन्न करती है तथा अब वह इस समस्या का समाधान करने के लिए यू (U) के खूले सिरे से 'चक्कर का मार्ग' (चित्र न० 2) बनाता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। इस प्रकार लेविन महोदय का मानना है कि वह लक्ष्य तथा अपने को उस सातत्य (continuous) जीवन-विस्तार में देखता है जो बाधा के बाहर से चक्कर काटकर जाता है। लेविन व उसके समर्थकों का विचार है कि—अधिगम कोई नवीन अथवा विभिन्न समस्या नहीं है। यह तो जीवन विस्तार की पुन: संरचना मात्र का विषय है। यदि हम संरचना के मुख्य नियम या जीवन विस्तार के प्रबन्ध को हल कर सकते हैं तो हम मनोविज्ञान की सभी महत्वपूर्ण समस्याओं को समझ सकेंगे तथा उन सब में अधिगम को समझ जायेंगे।

संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत के कुछ महत्वपूर्ण प्रत्यय
(Main concepts in Lewin's congnative field- Theory)

लेविन के संज्ञानात्मक क्षेत्र सिद्धांत को उसके कुछ महत्वपूर्ण प्रत्ययों के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त करके, अधिक स्पष्ट रूप से स्पष्ट किया जा सकता है—

1. मानव (Person)—लेविन महोदय का मानना है कि व्यक्ति या मानव को उसकी योग्यताओं के सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है। प्रत्येक मानव की कुछ अपनी आवश्यकता है जो उसके व्यवहार की दिशा निर्धारित करती है तथा यह दिशा व्यक्ति को लक्ष्य (Goal) की ओर मोड़ देती है जो व्यक्ति में तनाव भर देती है। व्यक्ति जब तक अवरोधों को पार करके लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक उसे पूरा करने के लिए निरन्तर प्रयासशील रहता है और यदि वह इन्हें पूरा नहीं कर पाता है तो उसमें तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

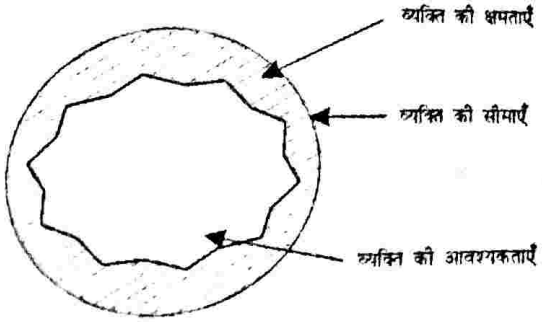

2. क्षेत्र (Field) क्या है? (What is field)—कुर्ट लेविन के अनुसार—एक मनोवैज्ञानिक के लिए क्षेत्र से तात्पर्य व्यक्ति के उस सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक संसार से है जिससे वह किसी समय विशेष मे विचरण करता है। इस प्रकार के संसार के अन्तर्गत मनुष्य स्वयं और सारे तथ्य (facts), विश्वास (Beliefs) धारणायें (concept) तथा आशायें (Expectations) आती है। यह क्षेत्र प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग होता है जैसे—एक वैज्ञानिक क्षेत्र का प्रयोग विभिन्न नवीन आविष्कारो के लिए करता है जबकि एक नक्षत्रवेत्ता क्षेत्र का प्रयोग तारों के लिए करता है।

3. जीवन विस्तार क्या है? (What is life space)—जीवन विस्तार का तात्पर्य उस आशय से है, जिसमें मनुष्य रहता है और वातावरण का प्रभाव व्यक्ति पर निरन्तर पड़ता है। लेविन का कहना है कि जीवन-विस्तार की संरचना के अन्तर्गत व्यक्ति तथा उसकी आवश्यकताओं व योग्यताओं को समाविष्ट किया जाता है। जीवन विस्तार कुछ बाह्य तत्वों से घिरा होता है, जिसे लेविन ने विदेश माल कहा है। लेविन के अनुसार—"जीवन विस्तार में होने वाले किसी भी परिवर्तन को व्यवहार कहते हैं।" वातावरण को स्पष्ट करते हुए कहा है कि इसका तात्पर्य प्राकृतिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण से है जिससे मनुष्य लगातार संघर्ष करता रहता है और उससे प्रभावित होता है। सभी व्यक्तियों की अपनी आवश्यकताएँ योग्यतायें और सीमायें होती है और इन सबके चारों ओर उसका वातावरण होता है तथा यह वातावरण जीवन विस्तार की

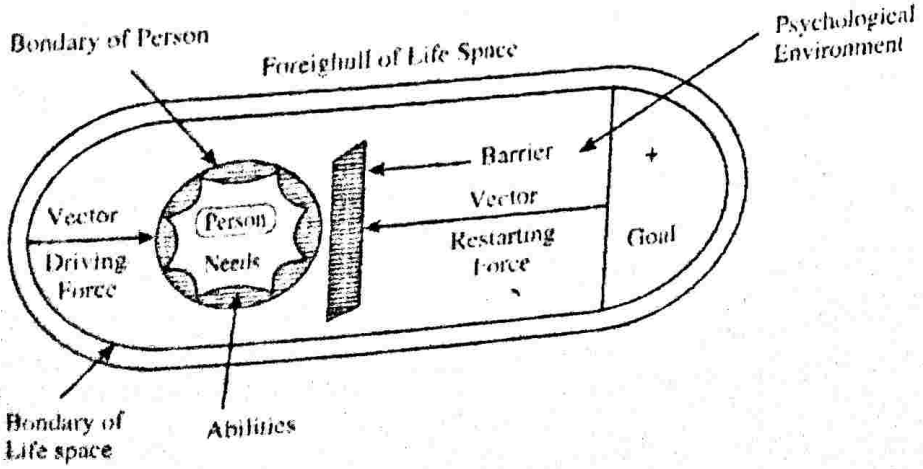

सीमा से घिरा होता है। उनका कहना है कि जीवन विस्तार यद्यपि वस्तुओं, कार्यात्मक एवं सांकेतिक सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है तथा उसके एक भाग में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव अन्य भाग पर भी पड़ता है। लेविन महोदय के जीवन-विस्तार की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

1. किसी विशिष्ट समय में व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करने वाले समग्र प्रभाव को, जीवन विस्तार बतलाया है।

2. "जीवन-विस्तार में होने वाले किसी भी परिवर्तन को व्यवहार कहते है।

3. किसी व्यक्ति का समग्र मनोवैज्ञानिक जगत ही उसका जीवन-विस्तार होता है।

4. जीवन विस्तार भिन्न-भिन्न प्रदेशों से बना होता है। इसमें मुख्यत: दो प्रकार के प्रदेश होते हैं—

(i) सकारात्मक शक्ति वाले प्रदेश।

(ii) नकारात्मक शक्ति वाले प्रदेश।

5. जीवन-विस्तार के अन्तर्गत व्यक्ति एवं उसका वातावरण परस्पर सम्बन्धित होते हैं तथा परस्पर प्रभाव डालते हैं। लेविन महोदय ने जीवन-विस्तार को निम्न गणितीय सूत्र द्वारा व्यक्त किया है—

$$B = f(P, E)$$

जहाँ, B व्यवहार के लिए, f कार्य (function), P व्यक्ति के लिए E कुल वातावरण के लिए प्रयोग किया गया है। इसका तात्पर्य है कि जीवन-विस्तार व्यक्ति तथा वातावरण दोनों का फलन है। ("Life space is a function of Person and Environment both.")

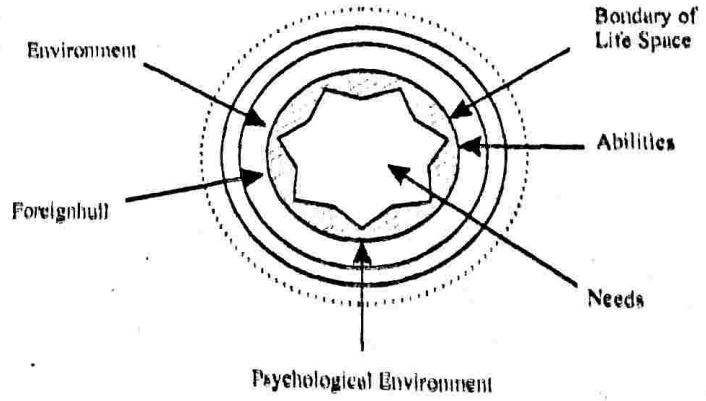

6. जीवन विस्तार यथार्थ वस्तुओं, कार्यात्मक एवं सांकेतिक सम्बन्ध को प्रदर्शित करता है।

7. जीवन विस्तार विदेशी माल (foreign Mall) से घिरा रहता है। विदेशी माल (foreign Mall) से तात्पर्य उन तत्वों से है जो किसी समय विशेष में तो जीवन विस्तार के अंग नहीं होते, परन्तु वे कभी भी जीवन विस्तार के अंग हो सकते हैं।

8. जीवन विस्तार के अंग समस्त मनोवैज्ञानिक घटनाएँ हैं।

9. जीवन विस्तार के एक भाग में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव अन्य भाग पर भी पड़ता है।

10. जीवन-विस्तार मनोवैज्ञानिक स्थिति के लिए तकनीकी पद है।

11. सभी मनोवैज्ञानिक घटनायें यथा-कोई क्रिया करना, सोचना, अधिगम, स्वप्न देखना, आशा करना आदि सभी जीवन विस्तार के अंग है।

4. तलरूप क्या है? (What is Topology)—क्षेत्र सिद्धांत को तल रूप सिद्धांत भी कहकर सम्बोधित किया जाता है। तलरूप का प्रत्यय रेखागणित (Geometry) से लिया गया है। इसमें भीतर-बाहर तथा सीमा के प्रत्ययों की विवेचना की जाती है। इसमें लम्बाई, चौड़ाई तथा मोटाई से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। पानी की एक बूंद तथा पृथ्वी तल रूप, रेखागणित की दृष्टि से एक समान समझे जाते है। तल रूप विचार व प्रत्यय जब मनोविज्ञान मे प्रयोग किये जाते है तो वह उद्देश्य (Goals) तथा उनकी प्राप्ति के बीच बाधाओं के सम्बन्ध मे व्यक्ति की स्थिति को स्पष्ट करते हैं।

तलरूप से ही इस सिद्धांत की अवधारणा ली गई है। तलरूप मे दूरी, आकार व आकृति का कोई महत्व नहीं होता है। कुर्ट लेविन के अनुसार—"व्यक्ति के व्यवहार को समझने हेतु व्यक्ति की स्थिति को उद्देश्यों से सम्बन्धित मानचित्र में निर्धारित करने तथा प्रयासों की जानकारी आवश्यक है।"

5. विदेशी माल (Foreign Mall) **क्या है?**—विदेशी माल को बाहरी आवरण भी कहते है। समस्त अमनोवैज्ञानिक तथ्यों का वह मिश्रण जो जीवन-विस्तार के चारों ओर घिरा होता है, विदेशी माल कहलाता है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के शारीरिक तथा सामाजिक वातावरण के वे भाग निहित होते है जो समय विशेष में व्यक्ति के जीवन विस्तार के अंग नहीं होते, लेकिन कभी भी अंग हो सकते है। यह व्यक्ति की व्यावहारिक सम्भावनाओं को सीमित करता है।

6. सदिश क्या है? (What is Vector?)—सदिश की अवधारणा भौतिक शास्त्र से सम्बन्धित है। मनोविज्ञान में सदिश एक बल का प्रतिनिधित्व करता है जो व्यक्ति के व्यवहार को लक्ष्य की ओर अथवा लक्ष्य से दूर ले जाने की ओर संकेत करता है। सदिश शक्ति व दिशा दोनों को अभिव्यक्त करता है जो एक विशेष दिशा में की जाने वाली प्रवृत्ति होती है। इसके अन्तर्गत तीन तथ्यों का समावेश होता है जो क्रमशः दिशा, शक्ति तथा प्रयोग बिन्दु हैं। सदिश में एक विशेष दिशा में जाने की प्रवृत्ति होती है।

7. कर्षण शक्ति क्या है? (What is velences)—कर्षण शक्ति जीवन विस्तार के किसी क्षेत्र या प्रदेश की आकर्षण शक्ति या प्रतिकर्षण शक्ति (Attracting or Repelling force) होती है। ये शक्तियाँ सकारात्मक तथा नाकारात्मक दोनों प्रकार की होती हैं। सकारात्मक या धनात्मक शक्तियों की ओर व्यक्ति आकर्षित होता है जबकि नाकारात्मक शक्तियों से व्यक्ति दूर हटता है।

मौरिस एवं विगी के अनुसार—"कर्षण शक्ति किसी क्षेत्र या प्रदेश की आकर्षण शक्ति या प्रतिकर्षण शक्ति होती है।"

"Velences are the attracting or repelling Powers of regions."

8. अवरोध क्या है? (What is Barrier ?)—अवरोध वातावरण का एक गत्यात्मक पहलू है। वातावरण की वह शक्ति जो व्यक्ति को उसके उद्देश्य तक पहुँचने में अवरोध या बाधा उत्पन्न करती है उसे अवरोध (Barrier) कहते हैं।

9. मनोवैज्ञानिक वातावरण क्या है ? (What is Psychological Environment ?)—लेविन का मानना है कि मनोवैज्ञानिक वातावरण के अन्तर्गत सामाजिक एवं भौतिक वातावरण समाविष्ट होता है। इन दोनों तरह के वातावरण के तत्व विशिष्ट समय में व्यक्ति पर प्रभाव डालते हैं।

10. योग्यतायें (Abilities)—वातावरण को समझने की ज्ञानात्मक क्षमता तथा वातावरण में परिवर्तन उत्पन्न करने की कार्यात्मक क्षमता है।

लेविन महोदय ने अधिगम को वातावरण का संगठन कहा है तथा पुरस्कार एवं दण्ड को अधिगम में अत्यधिक महत्व प्रदान किया है। उनका मानना है कि बालक पुरस्कार से अभिप्रेरित होकर किसी कार्य को करने हेतु अधिकाधिक प्रयास करने लगता है और बालक दण्ड से भयभीत होकर अधिगम हेतु अभिप्रेरित नहीं होता है।

संज्ञानात्मक क्षेत्र का शिक्षा में प्रयोग (Application of cognitive field theory in Education)—संज्ञानात्मक क्षेत्र का शिक्षा में निम्न प्रयोग होता है—

(1) यह सिद्धांत उद्देश्य के स्पष्टीकरण तथा उसकी प्राप्ति पर विशेष बल देता है।

(2) इस सिद्धांत का मनोविज्ञान के समस्त क्षेत्रों में प्रयोग किया जाता है। यह विशेषकर शिक्षा मनोविज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र प्रयुक्त किया जाता है।

(3) यह सिद्धांत इस तथ्य पर जोर देता है कि शिक्षक, छात्रों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करें।

(4) यह सिद्धांत छात्रों की अन्तर्दृष्टि या सूझ विकसित करने पर बल देता है।

(5) यह सिद्धांत बल देता है कि शिक्षक को छात्रों के जीवन क्षेत्र को पूरी तरह समझना चाहिए।

(6) यह सिद्धांत इस बात पर बल देता है कि शिक्षक, छात्रों को समस्या का स्पष्ट ज्ञान दें जिससे छात्र इसे हल करने हेतु अभिप्रेरित हो सके।

(7) यह सिद्धांत शिक्षा में छात्रों के 'स्व' को महत्व देता है क्योंकि इस सिद्धांत की मान्यता है कि जब तक छात्र स्वयं अपनी आवश्यकताओं, योग्यताओं, वातावरण तथा अपने उद्देश्यों से परिचित नहीं होंगे तब तक वे उचित दिशा में व्यवहार नहीं कर सकेंगे न सीख सकेंगे।

(8) यह सिद्धांत शिक्षक द्वारा छात्रों के मानसिक तनावों को समझकर उसे दूर करने के प्रयास पर बल देता है क्योंकि जबतक ये तनाव दूर नहीं होंगे तब तक छात्र कुछ भी नहीं सीख सकते हैं।

(9) यह सिद्धांत विद्यालय और कक्षा के वातावरण को उचित रूप से संगठित करने पर बल देता है क्योंकि इससे वातावरण की अनेक समस्याएँ हल होंगी।

(10) यह सिद्धांत शिक्षा में अवरोधों के महत्व को स्वीकार करता है।

(11) यह सिद्धांत सीखने में छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर बल देता है।

(12) यह सिद्धांत इस तथ्य पर बल देता है कि सभी छात्र मानसिक व मनोवैज्ञानिक रूप से सीखने के लिए तत्पर रहें क्योंकि प्रत्येक छात्र का जीवन विस्तार भिन्न-भिन्न होता है और यह सीखने के लिए उपयुक्त होता है।

(13) यह सिद्धांत सीखने में उचित निर्देशन देने पर बल देता है, इससे सीखने में समय और शक्ति की बचत होती है।

(14) यह सिद्धांत सीखने में योग्यताओं पर विशेष बल देती है।

(15) यह सिद्धांत अधिगम के तीनों स्तरों के अनुरूप ही शिक्षण की व्यवस्था पर बल देता है।

7. टॉलमैन का चिन्ह सिद्धात
(Tolman's sign Theory)

अधिगम के चिन्ह सिद्धांत के प्रतिपादक अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के **प्रो० एडवर्ड चेस टालमैन** (Edward chace Tolman) है। उनके इस सिद्धात को **प्रतीक अधिगम** (sign Learning) भी कहा जाता है। उनके सिद्धात का उल्लेख उनकी प्रकाशित पुस्तकों क्रमशः Purposive Behaviour in Animals and Man (1932), Drives Toward war (1942) तथा collected Papers in Psychology (1951) है। उसने उद्दीपन-अनुक्रिया (S--R) सिद्धांत तथा प्रयत्न एवं भूल (Trial and Error) विधि से ऊपर उठकर अपनी विचारधारा को प्रतिपादित किया। टॉलमैन महोदय ने इन सिद्धांतों को सहज साधारण एवं प्रारम्भिक अवस्थाओं के सीखने में तो स्वीकार किया, किन्तु जटिल मानवीय अधिगम में, जहाँ लक्ष्य एवं प्रयोजन महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है, वहाँ इनकी यथार्थता समाप्त हो जाती है। टालमैन महोदय के अनुसार—व्यवहार वस्तुनिष्ठ रूप से निर्धारणीय उद्देश्य के अनुरूप नियमित होता है इसीलिए इन्हें प्रयोजनपूर्ण व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक कहा जाता है। टॉलमैन प्रयोजनवादियों की भाँति यह मानकर चलता है कि जीवन की सभी प्रक्रियाएं तथा अधिगम सप्रयोजन है।

टॉलमैन महोदय के सिद्धात को हम मनोविज्ञान के प्रयोजनमूलक सम्प्रदाय के अन्तर्गत रखते है। इस सिद्धात का मानना है कि लक्ष्य का मुख्य महत्व सीखने की क्रिया में है। कुत्ते का सीटी सुनकर दौड़ना, इसीलिए